डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 10.04.2021

पत्र : अष्टम / साहित्य सिद्धांत और हिन्दी आलोचना

③ अनुभाव :- जो भावों का अनुभव कराते हो, उन्हें अनुभाव कहते हैं। "अनुभावयन्ति इति अनुभावा:" आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में अनुभाव की परिभाषा इस प्रकार दी है—

"उद्बुद्धं कारणै: स्वै: स्वैर्बहिर्भावं प्रकाशयन्।
लोके य: कार्यरूप: ~~सोऽनुभाव~~ सोऽनुभाव: काव्यानाट्ययो:॥"

अनुभाव के पाँच भेद हैं :—

क) कायिक ख) वाचिक ग) मानसिक
घ) आहार्य च) सात्विक

क) कायिक अनुभाव :- आंगिक चेष्टाएँ जैसे - कटाक्ष, हस्तसंचालन आदि कायिक अनुभाव कही जाती हैं।

ख) वाचिक अनुभाव :- भाव दशा के कारण वचन में आए परिवर्तन को वाचिक अनुभाव कहते हैं।

ग) मानसिक अनुभाव :- आंतरिक प्रमोद आदि भाव को मानसिक अनुभाव कहते हैं।

घ) आहार्य अनुभाव :- बनावटी वेश को आहार्य अनुभाव कहते हैं।

च) सात्विक अनुभाव :- शरीर के स्वाभाविक अंग विकार को सात्विक अनुभाव कहते हैं।

सात्विक अनुभावों की संख्या आठ है :—

i) स्तंभ ii) स्वेद iii) रोमांच iv) स्वर भंग
v) कंप vi) वैवर्ण्य (चेहरे का रंग बदल जाना)
vii) अश्रु viii) प्रलय (निश्चेष्टता)

उदाहरण :- भय का अनुभव – देह में कंपकंपी होना, धड़कने बढ़ जाना, साँस की गति रुक-सी जाती है और आँखों के सामने दृश्य की भयंकरता नाचने लगती है। इस चेष्टा को ही अनुभाव कहते हैं।

④ संचारी भाव / व्यभिचारी भाव :- संचारी अर्थात् गतिशील या आस्थिर।

आस्थिर या गतिशील मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में कहा है —

"विविधाभिमुख्येन रसेषु चरन्तीति व्यभिचारिणः।"

अर्थात् ये सभी रसों में यथा संभव संचरण करते हैं, इसलिए भी इसे संचारी या व्यभिचारी भाव कहा जाता है। इनकी संख्या - 33 है।

1) निर्वेद (वैराग्य), 2) ग्लानि, 3) शंका, 4) असूया (ईर्ष्या), 5. मद, 6) श्रम, 7) आलस्य, 8) दैन्य, 9) चिन्ता, 10) मोह, 11) स्मृति, 12) धृति (धैर्य), 13) व्रीड़ा (लज्जा), 14. चपलता, 15. हर्ष, 16) आवेग, 17) जड़ता, 18) गर्व, 19) विषाद, 20) औत्सुक्य, 21) निद्रा, 22) अपस्मार (मूर्च्छा), 23) स्वप्न, 24) विबोध (जागृति), 25. अमर्ष (असहिष्णुता), 26) अविहत्था (भाव छिपाना), 27) उग्रता, 28) मति 29) व्याधि, 30) उन्माद, 31) त्रास, (32) वितर्क 33) मरण।

अर्थात विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है। विभाव से भाव की उत्पत्ति होती है, अनुभाव से उसकी अभिव्यक्ति होती है और संचारी भाव से उसकी पुष्टि होती है। जब इन तीनों के द्वारा स्थायी भाव में पूर्णता आ जाती है, तब वह 'रस' कहलाता है।